2GP71R

पाठ – 5

बरखा आथे

लाला जगदलपुरी

लोगन मन कहिथे बदलाव ह हमर संसार के नियम हवय ! जेकर कारण से समय के साथ हमर धरती माता के रूप ह घलो बदलत रहिथे। कभू चारों खुँट गर्मी के दिन म रूखराई मन के पत्ता ह झर जाथे अऊ ठक–ठक ले दिखथे। त कभी चारो खुँट बरसात होय ला पानी ह भर जाथै। सुक्खा भुइयां म हरियाली छा जाथे। तब लगथे हमर सपना ह सिरतोन होगे। किसान अऊ बनिहार के मन खुशी ल चमक जाथे। करिया–करिया बादर देखके अइसन लगथे जइसे दुःख–पीरा के चिट्ठी ल बादर हरकारा बनके बरखा ल बुलाके लाए हवय। अउ जेकर कारण चारों खुँट आज जम्मो लोगन मन खुशी से झुमत हवय। किसम–किसम के साग–पान फरे–फूले हवय अऊ धरती के जम्मो जीव मन के प्यास आज बुझ जाथे।

खेती ल हुसियार बनाय बर
भुइयाँ म बरखा आथे।
जिनगी ल ओसार बनाय बर
भुइयाँ म बरखा आथे।
सोन बनाय बर माटी ल
सपना ल सिरतोन बनाय बर,
आँसू ल बनिहार बनाय बर
भुइयाँ म बरखा आथे।

बाजत रहिथे झिमिर–झिमिर
रोज चिकारा अस बरखा के।
बाजत रहिथे घड़–घड़–घड़
रोज नंगारा अस बरखा के।
खुसियाली के चिट्ठी लेके
बादर दुरिहा–दुरिहा जाथे,
करिया–करिया बादर ल
समझव हलकारा अस बरखा के।

जोत जोगनी के तारा अस
जुग–जुग बरथे अँधियारी म।
आसा, मन के, बिजली बन के
चम–चम करथे अँधियारी म।
मेचका मन के आरो मिलथे
कपस–कपस जाथे लइका हर,
हवा बही कस कभू उदुप ले
कहूँ खुसरथे अँधियारी म।

कहूँ तोरइ, तूमा, रमकेलिया
झूलत होवे बखरी म।
कहूँ करेला–कुँदरु अउ रखिया
फूलत होवे बखरी म।
कहूँ जरी ह लामे होही,
बरबट्टी ह ओरमे होही।
खुस होके लइका–पिचका मन
बूलत होही बखरी म।

अतका पानी दे तैं, जतका
जिनगी के बिस्वास माँगथे।
अतका पानी दे तैं, जतका
अन लछमी ह साँस माँगथे।
मोर देस के गाँव–गाँव ल
अतका पानी दे तैं बरखा,
जतका पानी पनिहारिन ल
तरिया तीर पियास माँगथे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

भुइयाँ	=	भूमि, धरती	ओसार	=	शक्तिशाली
सिरतोन	=	सच,सत्य	बनिहार	=	मजदूर
चिकारा	=	सारंगी जैसा एक प्रकार का बाजा	हलकारा	=	संदेशवाहक
			जोगनी	=	जुगनू
आरो	=	आवाज,जानकारी	कपस जाथे	=	काँप जाते हैं
जरी	=	एक प्रकार का पौधा, जिसका सब कुछ सब्जी के काम में आता है।(खेंड़हा)	ओरमे होही	=	लटका होगा
			बूलत	=	घूमना
			अन	=	अन्न
बिसाबो	=	खरीदेंगे	फरिका	=	बाँस आदि से बना किवाड़

अभ्यास

पाठ से

1. बरखा आये के का कारण हवय ?
2. बरखा आये से जिनगी म का परभाव होथे ?
3. सपना ह सिरतोन कइसे बनथे ?
4. बरखा ह कोन–कोन रूप म बाजत हवय ?

5. कवि ह बादल ल हरकारा कस काबर कहे हवय ?
6. अंधियारी म बरत जोगनी ल कवि ह का जिनिस कहे हवय ?
7. लइका मन का कारण से कपसत हवय ?
8. कवि बरखा ले कतका पानी माँगत हे ?
9. खाल्हे लिखाय कविता मन के अर्थ लिखव–
   (क) जिनगी ल ओसार बनाय बर भुइयाँ म बरखा आथे।
   (ख) जतका पानी पनिहारिन ल तरिया तीर पियास माँगथे।
   (ग) आसा मन के बिजली बन के चम–चम करथे अँधियारी म।

पाठ से आगे

1. बरखा आये के पहिली अऊ बाद में कोन–कोन से रितु होथे ? तीनों रितु म कोन–कोन से अंतर देखे बर मिलथे ? कक्षा में बात करके लिखव।
2. किसान मन बरखा आये के पहिली किसानी करे बर कोन किसम से तइयारी करथें ? ओकर ले खेती बारी मां का लाभ होथे ?
3. बरखा रितु आये से हमर घर के चारों कोती बदलाव होथे जेमा झंझटहा अऊ सुघ्घर दुनो लागथे। अपन अनुभव ल लिखव।
4. कवि ह देस के गाँव बर काबर पानी मांगत हे अऊ ओकर से गाँव म का–का परभाव होही ?

भाषा से

1. ओहर नदिया के तीर बैठे रहिस।
   इहाँ तीर के मायने 'पास' हवे। तीर के उल्टा शब्द दुरिहा हवे।
   अइसने किसम से खाल्हे लिखाय सब्द मन के अर्थ समझके हिंदी में उल्टा सब्द लिखव।
   बिस्वास, खुस, ओसार, बनिहार, सिरतोन, बिसाबो आदि।
2. ''चम–चम करथे अँधियारी में'' कविता के पंक्ति म चम–चम सब्द ह सँघरा दू बेर आये हवय।
   जब कोनो सब्द एक संघरा दू बेर आथे त ओला पुनरूक्ति सब्द कहे जाथे। चम–चम सब्द जइसन सँघरा सब्द ल पाठ ले छाँट के लिखव।
3. पाठ में पानी सब्द आये हवय जेकर मायने 'जल' होथे अऊ 'नीर' घलो कहिथे।
   भाषा म जेन सब्द मन के मायने समान होथे वोला पर्यायवाची सब्द कहे जाथे। अइसने परकार के सब्द मन के अर्थ समान होथे।
   जैसे– पानी–जल, नीर
   अइसने परकार से खाल्हे लिखाय सब्द मन के हिन्दी म अर्थ लिखके पर्यायवाची सब्द लिखव। सोन, बरखा, बिजली, फूल, लछमी, भुइयाँ।

योग्यता विस्तार

1. हमर छत्तीसगढ़ में बरखा जइसन अलग–अलग तिहार उपर घलो कविता लिखे गेहे। ओमन ला खोज के पढ़व।
2. लक्ष्मण–मस्तुरिहा के गाये गीत ''मोर संग चलव रे'' ला सुनव अऊ कक्षा में गावव।
3. ''मोर गँवई गाँव लागय बड़ सुघ्घर–सुघ्घर सबके घर दुवार दिखत हवय उज्जर–उज्जर।''
   अइसने तुक मिलाके चार पंक्ति के कविता लिखव।

इन्हें भी जानें :–

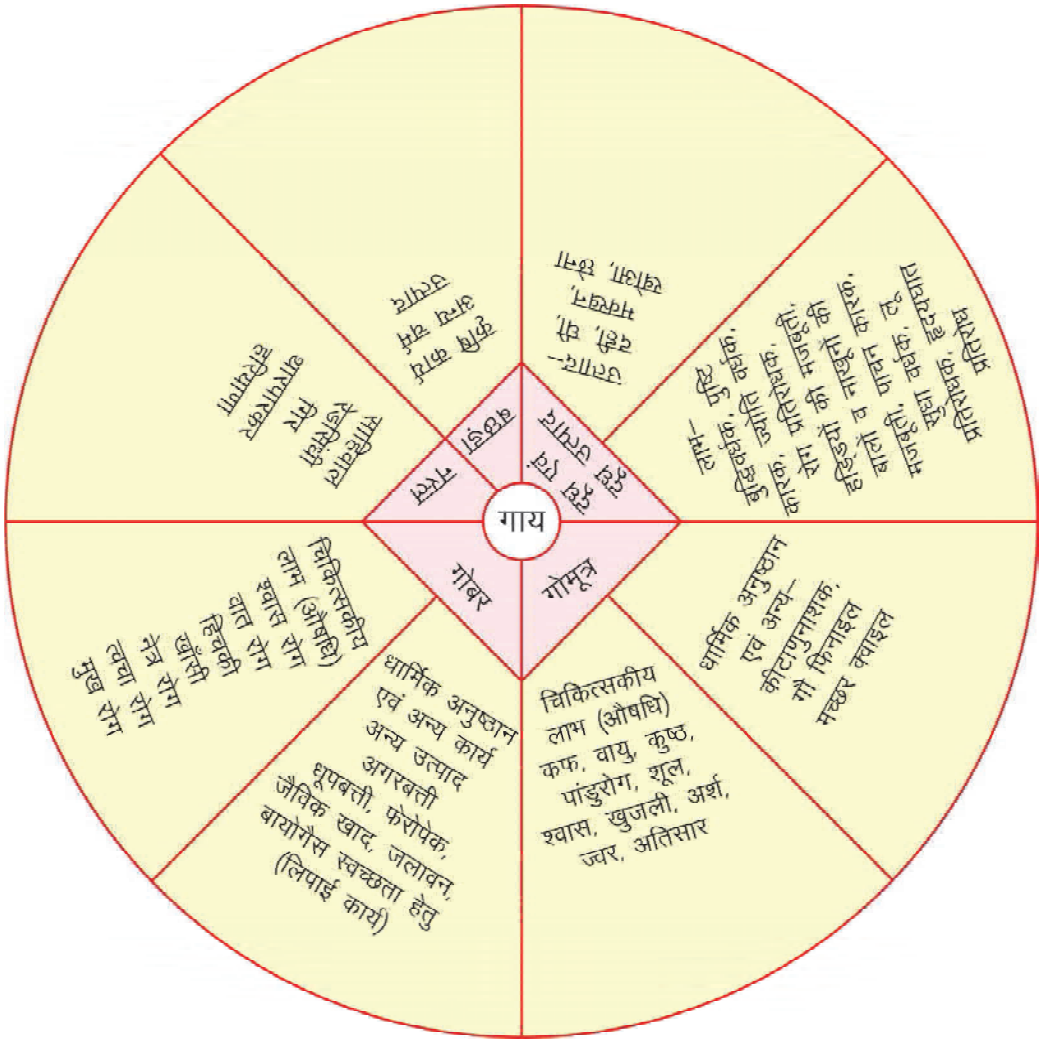

टीप– उपर्युक्त बिन्दुओं पर छात्र/छात्राओं से परिचर्चा, वाद–विवाद, लेखन आदि कराएँ।

●●●